आत्मनिर्भर भारत

Prepared for :
Self-reliant India

Prepared by :
Sharad Yadav

sharadyadavaav@gmail.com
Unnao,U.P.

भूमिका

आधुनिक समय में प्रत्येक भारतीय का यह सपना है कि हमारा राष्ट्र आत्मनिर्भर, सशक्त और संपन्न बने। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखते हुए, मैंने इस पुस्तक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करने का प्रयास किया है। यदि इसमें कोई त्रुटि हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। आज हमारा साझा लक्ष्य देश को उन्नति के उच्चतम शिखरों तक ले जाना है।

प्रगति का संकल्प

जीवन में यदि असफलता हाथ आए तो निराश होने के बजाय अधिक परिश्रम करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कोई न कोई विशेषता अवश्य होती है। रट्टा मारने की शिक्षा के स्थान पर हमें AI नवाचार (Innovation) को अपनाना होगा। मुझे विश्वास है कि आप देश के विकास में योगदान देकर अपने कुल और राष्ट्र का गौरव बढ़ाएंगे। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

— शरद यादव

विषय सूची (Index)

- आत्मनिर्भरता की आवश्यकता
- भारत: विश्व की चौथी (4th) बड़ी अर्थव्यवस्था
- शिक्षा में बदलाव: सड़ते स्कूल से स्मार्ट स्कूल तक
- तकनीकी चुनौतियां: ब्रेन ड्रेन और स्वदेशी सॉफ्टवेयर का अभाव
- स्वदेशी AI क्रांति: ओला कृत्रिम और सरवम LLM
- डिजिटल शक्ति: UPI और भारत का बढ़ता दबदबा
- रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और निर्यात
- AI का मार्ग: सफलता, विफलता और दुरुपयोग

आत्मनिर्भरता की आवश्यकता

वर्ष 2020 की कोरोना महामारी के दौरान जब अंतरराष्ट्रीय बाजार ठप्प हो गए थे, तब पूरे विश्व को आत्मनिर्भरता का वास्तविक महत्व समझ आया। यदि भारत पूर्णतः आत्मनिर्भर हो जाए, तो बेरोजगारी जैसी गंभीर समस्या का समाधान स्वतः हो जाएगा। इससे गरीब वर्ग के लोग गरीबी रेखा से निकलकर संपन्नता की ओर बढ़ सकेंगे और देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

भारत: विश्व की चौथी (4th) बड़ी अर्थव्यवस्था

भारत वर्तमान में दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत अब ब्रिटेन को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी (4th) सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (Nominal GDP) बनने की दिशा में अग्रसर है। 'आत्मनिर्भर भारत' का वाक्यांश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा लोकप्रिय बनाया गया ताकि भारत विश्व अर्थव्यवस्था में एक अधिक कुशल, प्रतिस्पर्धी और लचीली भूमिका निभा सके।

शिक्षा में बदलाव: सड़ते स्कूल से स्मार्ट स्कूल तक

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का विजन था—"भूख, भय और निरक्षरता से मुक्त भारत"। आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षित होना अनिवार्य है। आज के युग में छात्रों को केवल 'रट्टा' (Rote Learning) नहीं मारना चाहिए, बल्कि AI तकनीक का उपयोग करके नई खोज (Innovation) करनी चाहिए। जब हमारी जनसंख्या शिक्षित और तकनीक-संपन्न होगी, तभी वह राष्ट्र के लिए एक 'उपहार' बनेगी।

भारत के कई सरकारी स्कूलों की स्थिति पहले काफी चिंताजनक रही है, जहाँ बुनियादी सुविधाओं और आधुनिक शिक्षा की कमी थी। लेकिन अब सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाए हैं। अब पुराने ढांचों को बदलकर 'स्मार्ट क्लास' और आधुनिक लैब वाले स्कूल बनाए जा रहे हैं, ताकि गरीब बच्चों को भी निजी स्कूलों जैसी सुविधाएं मिल सकें।सड़क से लेकर तकनीक तक, सरकार ने शिक्षा के बेहतरीन मॉडल पेश किए हैं:

जवाहर नवोदय विद्यालय (JNV): ग्रामीण प्रतिभाओं को विश्व-स्तरीय शिक्षा देना।

केन्द्रीय विद्यालय (KV): राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा और अनुशासन का प्रतीक।

अटल आवासीय विद्यालय: उत्तर प्रदेश सरकार की यह पहल श्रमिकों के बच्चों को मुफ्त और आधुनिक शिक्षा दे रही है। ये स्कूल आत्मनिर्भर भारत की नई पहचान हैं।

चुनौती भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्कूलों की स्थिति आज भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। कई गाँवों में स्कूलों की इमारतें जर्जर हैं और आधुनिक संसाधनों (जैसे कंप्यूटर और लैब) की भारी कमी है। इस 'डिजिटल डिवाइड' के कारण ग्रामीण बच्चे शहरों की तुलना में पिछड़ जाते हैं।

तकनीकी चुनौतियां: ब्रेन ड्रेन और स्वदेशी सॉफ्टवेयर का अभाव

आज भी हम तकनीकी रूप से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हैं:

ऑपरेटिंग सिस्टम: हमारे फोन और कंप्यूटर विदेशी OS (Android/Windows) पर निर्भर हैं। भारत के पास अपना कोई बड़ा ऑपरेटिंग सिस्टम नहीं है।

स्वदेशी सॉफ्टवेयर की उपेक्षा: भारत में बनी जोहो (Zoho) जैसी कंपनियों के उच्च-स्तरीय सॉफ्टवेयर होने के बावजूद हम अक्सर विदेशी विकल्पों को चुनते हैं।

ब्रेन ड्रेन (प्रतिभा पलायन): हमारे सबसे काबिल वैज्ञानिक और इंजीनियर्स विदेशों में जाकर विदेशी कंपनियों को बड़ा बना रहे हैं। हमें इस 'प्रतिभा' को भारत में ही रोकना होगा।

स्वदेशी AI का उदय (Krutrim और Sarvam)

पहले भारत के पास अपना कोई 'Large Language Model' (LLM) नहीं था, हम ChatGPT जैसे विदेशी टूल्स पर निर्भर थे। लेकिन अब: ओला कृत्रिम (Krutrim AI): यह भारत का अपना AI है जो 22 भारतीय भाषाओं को गहराई से समझता है। सरवम AI (Sarvam AI): यह स्टार्टअप भारतीय भाषाओं के लिए विशेष मॉडल बना रहा है ताकि तकनीक हर गाँव तक पहुँचे।
महत्व: स्वदेशी AI होने से हमारा राष्ट्रीय डेटा सुरक्षित रहता है और विदेशी निर्भरता खत्म होती है।

डिजिटल क्रांति और UPI

जहाँ दुनिया के पास पुराना बैंकिंग सिस्टम था, भारत ने UPI (Unified Payments Interface) बनाकर सबको हैरान कर दिया:

भारत में एक छोटा दुकानदार भी डिजिटल पेमेंट लेता है। सिंगापुर, यूएई और फ्रांस जैसे देश अब हमारी इस तकनीक को अपना रहे हैं।

डेटा सुरक्षा: UPI ने दिखाया कि जब भारत अपना सिस्टम बनाता है, तो वह दुनिया में सबसे सुरक्षित और तेज होता है।

रक्षा क्षेत्र और सुरक्षा (Defense Export)

पहले भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक (Importer) था, लेकिन आज हम निर्यातक (Exporter) बन रहे हैं:

ब्रह्मोस और तेजस: भारत आज 80 से अधिक देशों को मिसाइलें और ड्रोन एक्सपोर्ट कर रहा है।

साइबर सुरक्षा: आज की लड़ाई मैदान से ज्यादा कंप्यूटर पर है। भारत अब अपने 'साइबर डिफेंस' को मजबूत कर रहा है।

आत्मनिर्भर रक्षा: INS विक्रांत जैसे स्वदेशी जहाजों ने भारत की समुद्री सुरक्षा को अभेद्य बना दिया है।

AI के मार्ग में सफलता, विफलता और दुरुपयोग

सफलता: भारत के पास दुनिया का सबसे बड़ा डेटा भंडार है जो AI को प्रशिक्षित करने के काम आता है।

विफलता: AI चलाने वाली 'चिप्स' (GPU) के लिए हम आज भी विदेशों पर निर्भर हैं।

दुरुपयोग का खतरा: AI का गलत इस्तेमाल जैसे 'डीपफेक' (Deepfake) और साइबर अपराध समाज के लिए बड़ी चुनौती हैं। छात्रों को तकनीक का प्रयोग नवाचार (Innovation) के लिए करना चाहिए, न कि केवल रट्टा मारने के लिए।

स्वदेशी उद्योग, आयुर्वेद और वैक्सीन मैत्री

टाटा का योगदान: रतन टाटा जैसे महापुरुषों ने शिक्षा और स्वास्थ्य में 9,000 करोड़ से अधिक का दान देकर आत्मनिर्भरता की नींव रखी।

आयुर्वेद: पतंजलि, डाबर, काज़ुक जैसी कंपनियों ने स्वदेशी वस्तुओं को वैश्विक पहचान दिलाई।

वैक्सीन किंग: कोविड काल में भारत ने न केवल स्वदेशी वैक्सीन बनाई, बल्कि 100 से अधिक देशों को दवाइयां निर्यात कर 'दुनियां की फार्मेसी' के रूप में अपनी ताकत दिखाई।

निष्कर्ष

आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि अपनी सोच और तकनीक में स्वतंत्र होना है।

नवाचार: हमें रट्टा मारने के बजाय AI इनोवेशन को अपनाना होगा।

स्वदेशी: जब हम अपनी प्रतिभा (Brain Drain) को देश में रोकेंगे और कृत्रिम AI व स्वदेशी सॉफ्टवेयर अपनाएंगे, तभी हम तकनीकी सुपरपावर बनेंगे।

विकास: आयुर्वेद, वैक्सीन और रक्षा निर्यात (BrahMos) में हमारी सफलता ने सिद्ध कर दिया है कि भारत विश्व गुरु बनने की राह पर है।

आइए, हम सब मिलकर अपनी प्रतिभा और स्वदेशी संसाधनों के बल पर भारत को एक पूर्णतः विकसित राष्ट्र बनाएँ।

जय हिन्द!